मानव का हृदय भगवान् का सबसे विशाल मन्दिर

वह अद्वय सत्ता, जिसकी मानव-समूह अल्लाह, खुदा, आहुर्मज्दा, ताओ के रूप में, परात्पर के रूप में पूजा करता है, जिस सत्ता को नास्तिक लोग अस्वीकार करते हैं, एक महासागर है जिसमें सभी धार्मिक धाराएँ प्रवाहित होती हैं। उसकी ही महिमा इंजील, कुरान, ग्रन्थसाहब और वेदों में गायी गयी है। प्रार्थना-भवनों, गिरजाघरों, मसजिदों तथा मन्दिरों में उसकी ही पूजा होती है। किन्तु, उसका सबसे विशाल मन्दिर तो मानव का हृदय है। वह सबमें व्याप्त, प्रविष्ट तथा अन्तर्व्याप्त है। वही हमारी सत्ता का मूल तत्त्व है।

- स्वामी चिदानन्द

ॐ नमो भगवते चिदानंदाय।
ॐ नमो भगवते चिदानंदाय।
ॐ नमो भगवते चिदानंदाय।
ॐ नमो भगवते चिदानंदाय।
ॐ नमो भगवते चिदानंदाय।

OM NAMO BHAGAVATE CHIDANANDAYA।
OM NAMO BHAGAVATE CHIDANANDAYA।
OM NAMO BHAGAVATE CHIDANANDAYA।
OM NAMO BHAGAVATE CHIDANANDAYA।
OM NAMO BHAGAVATE CHIDANANDAYA।

जप यज्ञाचा आपल्या शाखेचा ११ लाख संकल्प आहे. २०१४ अखेरी सर्व साधकांचा एकत्रित जप ८००५०० इतका झालेला आहे.

दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा वृत्तांत

- डिसेंबर २०१४ महिन्याचा सत्संग दि. २५ डिसेंबर रोजी श्री. नितीन देशपांडे यांचे घरी सपन्न झाला.
- 'दिव्य जीवन' या मासिक पत्रिकेचा डिसेंबर अंक परिवारातील सर्व सदस्यांना वितरित करण्यात आला.

❀ **पुणे शाखेचा पत्ता** ❀

श्री. गो. आ. नगरकर
'स्वानंद' एस्. २०
सहजीवन सोसायटी
पर्वती, पुणे ४११००९
☎ ९३७०५७०२०६

श्री. नितीन देशपांडे
'ईशावास्य'
प्लॉट नं. ४९ /सायंतारा,
डी. एस. के. विश्व
धायरी, पुणे ४११०४१
☎ ०९८५०९३१४१७
०९८५०८२६९९०

SERVE LOVE MEDITATE REALIZE
ॐ
THE DIVINE LIFE SOCIETY

पुस्त डाक

प्रति

दिव्य जीवन

(दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा)

स्वामी शिवानंद सरस्वती (ज्ञानयज्ञ म्हणून वितरित) स्वामी चिदानंद सरस्वती

वर्ष १० । अंक १

जानेवारी २०१५

नूतन वर्षाच्या परिवारातील सर्व सदस्यांना हार्दीक शुभेच्छा ! नववर्ष सर्वांना सुखशांतीचे आणि निरामय जावो हीच सद्गुरूचरणी प्रार्थना !!

महिन्याचा विचार

Living The Divine Life

To shed the animal in man and to sublimate the human in him into the divine, to express this sublimation in his daily, hourly life in thought, word and deed-that is divine life.

To speak the truth at all costs, to speak sweetly with love, to practise non-violence, celibacy, to behold the Lord in all forms is Divine life.

To be ever in communication with the Lord by annihilating mine-ness and egoism through faith, devotion and self-surrender is Divine life.

भगवान् के द्वारा हमारे पथ में लाये गये सुअवसर

हमें उन ऊँचाइयों पर अपने को आत्मोन्नत करना चाहिए जहाँ हम प्रकाश में आप्लावित हो जाते हैं। निराशा और उदासीनता के लिए कोई भी स्थान नहीं होना चाहिए। किञ्चित भी उत्साहहीनता नहीं होनी चाहिए। कहीं भी दुर्भाग्य नहीं है। जो-कुछ भी हमारे साथ घटता हैं, वह भगवान् जो परम शुभता और परम आनन्द प्रदाता हैं, के द्वारा हमारे पथ में लाये गये सुअवसर हैं।

अतः हम सही दृष्टिकोण अपनायें और जीवन में प्रत्येक आने वाली वस्तुस्थिति के पीछे भगवान् के हाथ को देखते हुए उन्हें दुर्भाग्यपूर्ण न मान कर सुअवसर समझें। यही सत्य है और यदि हम सत्य का चयन करते हैं, तो हम समस्त निराशाओं और दुःखों से अतीत हो जायेंगे। हम जान जायेंगे कि भगवान् का आनन्द-वदन हम पर आनन्द-वृष्टि कर रहा है।

- स्वामी चिदानन्द

कर्म ही पूजा है

कर्म ही पूजा है; कर्म ही ध्यान है। किसी प्रकार की कर्तृत्व-बुद्धि के बिना, किसी फल की प्रत्याशा न रख कर हर एक की गाढ़े प्रेम से सेवा करें। ईश्वर का दर्शन होगा। मानवता की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। सच्ची भावना से और आसक्ति या अहंकार न रखते हुए किये गये कर्म से मनुष्य का उद्धार होता है। यदि आप भक्त है, तो यह समझें कि आप एक मौन साक्षी हैं और सब-कुछ प्रकृति कर रही है। कर्म-मात्र पवित्र है। ऊँचे दृष्टिकोण या पारमार्थिक विचार या कर्मयोग की दृष्टि से कोई भी कर्म निकृष्ट नहीं है। झाड़ू लगाने का काम भी यदि उपर्युक्त भावना के साथ किया जाये, तो ईश्वर-साक्षात्कार में सहायक यौगिक कर्म बन जाता है।

हमारे हृदयों को स्वार्थ ने बुरी तरह जकड़ रखा है। यह स्वार्थ मनुष्य-जीवन में विष है। स्वार्थ ज्ञान को ढक लेता है। स्वार्थ संकीर्ण मनोवृत्ति का लक्षण है। भोग स्वार्थ और स्वार्थमूलक प्रवृत्ति को बढ़ाता है। यही मनुष्य के दुःखों की जड़ है। सच्ची आध्यात्मिक प्रगति निःस्वार्थ सेवा से प्रारम्भ होती है।

- स्वामी शिवानन्द

सत् और असत् कर्म की पहचान

सही चिन्तन करो। अपने विवेक और बुद्धि को काम में लाओ। शास्त्रों के आदेशों का पालन करो। सन्देह पैदा होने पर मनुस्मृति या याज्ञवल्क्यस्मृति के वचनों का अनुसरण करो। तब मालूम होगा कि तुम सही काम कर रहे हो या गलत। यदि तुम्हें लगे कि 'शास्त्र तो असंख्य हैं, समुद्र के समान अगाध हैं; उनमें प्रतिपादित सत्य को मैं समझ नहीं पाता हूँ; उनकी गहराई को मैं माप नहीं सकता हूँ; उनमें अन्तर्विरोध हैं, जिनके कारण मैं भटक गया हूँ, उलझा हुआ हूँ' तो फिर किसी ऐसे गुरु की बात मान कर चलो जिस पर पुरी श्रद्धा और विश्वास कर सकते हो। तीसरा मार्ग है ईश्वर-भय। अपने अन्तःकरण की आवाज सुनो। वह अन्तर्वाणी मार्ग दिखा सकती है। ज्यों - ही अन्दर की वाणी सुनायी दे, पल - भर के लिए भी देर न करो। दृढ़तापूर्वक उसके अनुसार काम में लग जाओ, किसी से पूछने - ताछने की आवश्यकता नहीं है। प्रतिदिन प्रातःकाल चार बजे उस अन्तर्वाणी को सुनने का अभ्यास करो। यदि मन में भय है, लज्जा है, संशय है, उलझन या आयास है तो समझो तुम गलत कर रहे हो। उसके विपरीत यदि सन्तोष है, समाधान है, आनन्द है तो समझो तुम ठीक कर रहे हो।

- स्वामी शिवानन्द